पक्षियों के माफिया

यह तो आपने भी सुना होगा कि कोयल घोंसला नहीं बनाती है और कौवे के घोंसले में अण्डे देती है। पता नहीं, यह सवाल आपके मन में आया या नहीं कि कौवे यह सहन क्यों करते हैं। वैज्ञानिकों को ज़रूर यह सवाल परेशान करता रहा है। जैसे कोपनहेगन विश्वविद्यालय के एण्डर्स पेप मोलर ने काफी पहले यह पता लगाया था कि बड़े धब्बों वाली कोयलें (*क्लेमेटॉर ग्लैण्डेरियस*) एक तरह का माफिया चलाती हैं। स्पेन में किए गए इस अध्ययन से पता चला था कि ये कोयलें अपने अण्डे मैगपाई के घोंसलों में देती हैं और यदि मैगपाई इन अण्डों को न रखें, तो कोयलें लौटकर मैगपाई के अण्डे या चूज़े नष्ट कर देती हैं।

अब पता चला है कि अमरीकी काऊबर्ड तो इन कोयलों से भी ज़्यादा खतरनाक हैं। इलिनॉय नेचुरल हिस्ट्री सर्वे के जेम्स हूवर करीब चार वर्षों से ब्राउन हेडेड काऊबर्ड्स (*मोलोथ्रस एटर*) का अध्ययन करते रहे हैं। ये काऊबर्ड्स अपने अण्डे वार्बलर नामक पक्षी के घोंसलों में देती है। आम तौर पर माना जाता था कि वार्बलर पहचान नहीं पाती कि ये अण्डे उसके नहीं हैं और चुपचाप उनको सेती रहती थी। मगर हूवर व स्कॉट रॉबिंसन ने इस बात की जांच की तो नतीजे हैरतअंगेज़ रहे।

अध्ययन करने के लिए हूवर व रॉबिंसन ने वार्बलर्स को 180 कृत्रिम घोंसले प्रदान कर दिए। कुछ समय बाद काऊबर्ड्स ने आकर अपने अण्डे इन घोंसलों में दिए। हूवर और रॉबिंसन ने इन्हें हटा दिया।

अण्डे हटाने की देर थी और काऊबर्ड्स ने ज़बर्दस्त हमला किया। उन्होंने घोंसलों में शेष बचे वार्बलर अण्डे नष्ट कर डाले। और तो और, कुछ वार्बलर्स ने यह होशियारी दिखाई थी कि बहुत जल्दी अण्डे दे दिए थे ताकि काउबर्ड द्वारा कब्जा किए जाने से पहले ही उनके चूज़े निकल आएं। काऊबर्ड ने इन अण्डों को भी तबाह करके वार्बलर्स को मजबूर कर दिया कि वे फिर से अण्डे दें। और इसके बाद वे वार्बलर पक्षियों की जासूसी करते रहे कि वे कहां जाकर फिर से घोंसला बनाते हैं ताकि सही समय पर अपने अण्डे भी वहीं दे सकें।

इस प्रक्रिया का परिणाम यह होता है कि काऊबर्ड को संतानोत्पत्ति के अवसर मुफ्त में मिलते हैं। लगभग 20 प्रतिशत वार्बलर घोंसलों में इन काऊबर्ड्स ने अण्डे दिए और नए बनाए गए घोंसलों में से भी 85 प्रतिशत में अण्डे दिए थे।

इस माफियागिरी के चलते वार्बलर के लिए समर्पण कर देना ही बेहतर होता है। देखा गया कि यदि वे काऊबर्ड के चूज़े को पाल लें तो उनके अपने औसतन तीन चूज़े जीवित रहते हैं। दूसरी ओर, यदि वे काऊबर्ड के अण्डे को अस्वीकार कर दें तो उनका मात्र एक चूज़ा ही बच पाता है। हूवर अब कोशिश कर रहे हैं कि इस पूरी प्रक्रिया की फिल्म बनाएं ताकि इसे बारीकी से समझा जा सके। और यह सवाल तो है ही कि क्या कोयलें भी कौवों के साथ ऐसा ही व्यवहार करती हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***